International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 03, March 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर्यावरण जागरूकता शिक्षण

डॉ0 सुनीता कुमारी,
सहायक प्राध्यापिका सह विभागाध्यक्ष,
समाजशास्त्र विभाग, मारवाडी महाविद्यालय,
ललित नारायण मिथिला विश्व विद्यालय, दरभंगा।

DOI: ijmra.ijrss.00989.88733

सारांश

पर्यावरण मनुष्य के शारीरिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। अपने आसपास के स्वच्छ वातावरण का मानव स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। पर्यावरण से अलग हटकर जीव की कल्पना संभव नहीं है। मानव पर्यावरण का अभिन्न अंग है। प्रगति के साथ.साथ उसकी उपयोगधर्मिता भी बढ़ती जा रही है। आदिमानव पर्यावरण से प्राप्त नैसर्गिक वस्तुओं का उपयोग आवश्यकतानुसार या सीमित रूप में करता था, जिससे पर्यावरण के संतुलन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता था। लेकिन औद्योगिक क्रांति के बाद से लेकर आज द्रुत गति से हो रहे तकनीकी विकास ने मानव को उपयोगकर्ता की बजाय उपभोक्ता बना दिया है जिसके कारण वह पर्यावरण के अंधाधुंध दोहन करते हुए उसके भोक्ता की भूमिका में आ गया है। मानव की महत्त्वाकांक्षाओं का पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ने से चारों ओर पर्यावरण का **ह्रास** दिखाई देने लगा है। पर्यावरण के इस प्रकार होते हुए **ह्रास** को रोकने के लिए जागरुकता की काफी जरूरत है और इससे संबंधित शिक्षण.व्यवस्था की भी,क्योंकि शिक्षा में ही व्यक्ति को इतना सक्षम बनाने का सामर्थ्य है कि वह क्या सही और गलत, उचित **और** अनुचित तथा अच्छे और बुरे का निर्णय ले सके। पर्यावरण के संरक्षण के बारे में अपने युवाओं को विशेष रूप से किशोर छात्र.छात्राओं को शिक्षित करने के लिए यह बहुत उपयोगी होगा कि छात्रों को पर्यावरणीय नैतिकता के बारे में पता होना चाहिए। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिक्षा पर्यावरणीय नैतिकता विकसित करने में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर सकती हैं।

आज के समय में पर्यावरण को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है ताकि स्कूल कॉलेज में इसके बारे में पढ़ाई हो सके और पर्यावरण के प्रति छात्र छात्राएँ जागरुक हो सके। जिससे ये बच्चे अपने पर्यावरण का ख्याल रखने के लिए प्रेरित हो सकेंगे, साथ ही अपने आस.पास के लोगों को भी जागरुक कर सकेंगे। शिक्षा के द्वारा पर्यावरण जागरुकता का प्रसार सरलता और प्रभावी तरीके से किया जा सकता है।

मुख्य शब्द. पर्यावरण, जागरूकता, स्वच्छता, मानव संरक्षण।

प्रस्तावना..मानव आदिकाल से पर्यावरण का अभिन्न अंग रहा है और वह अपने जन्म के साथ ही पर्यावरण का उपयोग करने लगा है। मानव की प्रगति और सभ्यता के विकास के साथ पर्यावरण समस्त जीवधारियों के जीवन और विकास को प्रभावित करने वाला घटक है। इसके अभाव में किसी जीव के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जहां पर्यावरण है वहीं जीवन है।लेकिन मानव विकास के मार्ग पर निरंतर प्रगतिशील रहने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बहुत उपयोग करते हैं।जिससे ये संसाधन क्षीण होने लगे हैं और पर्यावरण संतुलन व पारिस्थितिकीय चक्र पूर्णतः असंतुलित होने लगा है। मानवीय गतिविधियों का ही परिणाम है जिससे स्वयं मानव ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीव जगत पूर्णतः प्रभावित हो रहा है। ऐसे में समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है ताकि लोग जागरूक हो सके और पर्यावरण की रक्षा कर सके।इसके लिए जरूरी है पाठ्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी दी जाए साथ ही जागरूकता फैलायी जाए।

उद्देश्य..इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण जागरूकता के प्रति शिक्षा की क्या भूमिका है इसे बताना है।

उपलब्ध साहित्य..किताब,पत्रिकाएं,पेपर।

अध्ययन पद्धति.. गुणात्मक, विश्लेषणात्मक।

पर्यावरण का महत्व ..विश्वकोश के अनुसार पर्यावरण के अन्तर्गत उन सभी दशाओं, संगठन और प्रभावों को शामिल किया जाता है। जो किसी जीव अथवा प्रजाति के उद्भव, विकास एवं मृत्यु को प्रभावित करती है। शिक्षा मानव जीवन के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। जब किसी राष्ट्र या समाज में परिवर्तन व जन.चेतना की आवश्यकता का अनुभव हुआ है तब बुद्धिजीवी वर्ग की निगाहें शिक्षा पर ही आकर टिकी है। इसी को ध्यान में रखते हुये पर्यावरण रक्षा के लिए वर्तमान में पर्यावरणीय शिक्षा को प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम में विशेष स्थान दिये जाने पर जोर दिया जा रहा हैं मानव सहित सभी जीव

इसी पर्यावरण की उपज हैं और मानव इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना हैं। मानव की समस्त आवश्यकताएं जैसे. भोजन,घर,वस्त्र,आदि सामाजिक आवश्यकताएं एवं सौर मंडलीय क्रिया कलाप आदि का सीधा संबंध पर्यावरण से है। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में पर्यावरण के प्रमुख तत्वों सूर्य,पवन,पृथ्वी,वनस्पति,जल आदि की वंदना पर्यावरण के महत्व को दर्शाती है। पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। इसकी अनुपस्थिति में पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पर्यावरण से संबंधित अनेक समस्याओं के सामने आने के कारण पर्यावरण अध्ययन का महत्व दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र गति से ह्रास एवं प्रदूषण जैसी पर्यावरणीय समस्याएं किसी देश की सीमा तक सीमित नहीं है एक देश में उत्पन्न समस्या समस्त विश्व के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। अतः पर्यावरण के संरक्षण हेतु विश्व समुदाय को सामुहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। देखा जाए तो पाठ्यक्रम के अंग के रूप में पर्यावरण के अध्ययन से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत होती है।

पर्यावरण की संरचना,विविध घटकों का ज्ञान तथा मानव द्वारा किए जा रहे कार्यों से हो रहे पर्यावरण विनाश की जानकारी विद्यार्थी को पर्यावरण के अध्ययन से मिलेगी। जब इसकी समुचित जानकारी होगी तब ही व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सकता है।

पर्यावरणीय शिक्षण. पाठयक्रम में पर्यावरण अध्ययन का समावेश विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न कर पर्यावरण संरक्षण में भूमिका निभाएगा। यदि हम देखे तो पाएंगे कि बेल्गरेड,युगोस्लाविया में 1975 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण कार्यशाला में अंगीकृत बेल्गरेड चार्टर में पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा,उद्देश्य,विधि,निर्देशक,सिद्धांत और विषय वस्तु आदि को परिभाषित किया गया। 1977 में जॉजिया में 1987 में रूस में और 1990 में पर्यावरण शिक्षण व प्रशिक्षण की रणनीति विकसित की गई। भारत के बिहार राज्य मे 2018 से स्नातकोत्तर विभाग में अनिवार्य विषय के रूप में पर्यावरण व स्वच्छता नामक पेपर लागू किए गए।ऐसे प्रयासों से पर्यावरण जागरूकता में विस्तार आएगा। महाविद्यालयो में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा भी पर्यावरण से संबंधित बहुत तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते है जिसमें छात्र छात्राए हिस्सा लेते है और बहुत कुछ सीखते है।साथ ही हमारे देश मे अनेक सरकारी और गैर सरकारी संगठन है जो पर्यावरण की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा तथा प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में दिलचस्पी बढाई है।पर्यावरण और शिक्षा में सम्बन्ध को देखे तो पर्यावरण तथा शिक्षा शब्दों तथा इनके प्रत्ययों के अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि दोनों में विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण को गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा का विकास की प्रक्रिया कहते हैं तथा पर्यावरण में आन्तरिक तथा बाह्य सम्पूर्ण परिस्थितियों को सम्मिलित किया जाता हैए मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभिवृद्धि तथा विकास को प्रभावित करती है। प्रत्येक जीव तथा प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मनुष्य का वातावरण भौतिक, सामाजिक,सांस्कृतिक,आर्थिक तथा राजनैतिक होता है। शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिये परिवर्तन तथा सुधार भी किया जाता है जिससे बालकों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जा सके। मनुष्य तथा बालकों के व्यवहार परिवर्तन में वातावरण का विशेष महत्व है।

पर्यावरण जागरूकता... यदि पर्यावरण को यथावत छोड़ दिया जाय तो वह निरंतर लाखो साल तक जीवन का सहारा बन सकता है।इस योजना में एक मात्र सर्वाधिक अस्थिर और संभावित विनाशकारी शक्ति मानव प्रजाति है। मानव आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से पर्यावरण में जाने अनजाने दूरगामी और अपरिवर्तनीय बदलाव लाने की क्षमता रखता है। इसलिये संरक्षण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य है पर्यावरण के प्रति जन सामान्य में जागरूकता उत्पन्न करना। इसके अभाव में पर्यावरण संरक्षण का कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता। पर्यावरण चेतना हमारे देश में कोई नया विचार नहीं है यह तो वैदिक काल से ही हमारे चिंतन तथा जीवन शैली का अभिन्न अंग रहा है। पृथ्वी,आकाश,नदी,वृक्ष,वन्य प्राणी,सूर्य इत्यादि पर्यावरणीय तत्वो को देवता या देवतुल्य मानकर इनकी पवित्रता और गुणवत्ता की रक्षा परम कर्तव्य माना गया। किन्तु तीव्र औद्योगिकरण व नगरीकरण से उपजी भोगवादी सभ्यता व पाश्चात्य सोच हमे पर्यावरण के प्रति हमारी मूलभूत अवधारणा से दूर ले गई। फलस्वरूप जन सामान्य जाने अनजाने दैनन्दिन पर्यावरण को हानि पहुंचाने लगा। इसके अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने है।जैसे वैश्विक तपन,जलवायु परिवर्तन,ओजोन परत क्षय,अम्लीय वर्षा,मृदा की उर्वरता की कमी आदि।

व्यक्ति के लिए संसाधन बहुत महत्वपूर्ण है इसी पर व्यक्ति का विकास तथा उसकी जीवन शैली निर्भर करती है। चूंकि पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन तेजी से घट रहे हैं और मानव के कार्य कलापों के कारण हमारे पर्यावरण का अधिकाधिक ह्रास हो रहा है इसलिये कुछ करना चाहिए। अक्सर हम यह सोचते हैं कि पर्यावरण से संबंधित काम सरकार को करना चाहिए लेकिन यह सोच गलत है। पर्यावरण के ह्रास की रोकथाम हम सबके जीवन का अंग होना चाहिए जिस तरह किसी भी रोग का इलाज से बेहतर विकल्प उसकी रोकथाम होती है। पर्यावरण के प्रबंध में हम व्यक्ति रूप में अहम भूमिका निभा सकते हैं हम प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी रोक सकते हैं जैसे आज दिखावे के लिए व्यक्ति अनेक संसाधनों का अनावश्यक उपयोग करता है जो कि गलत है जैसे...भवनों की सुंदरता के लिए अनावश्यक लकड़ी का प्रयोग।

पर्यावरण संरक्षण केवल जन जागरुकता के द्वारा ही सम्भव है। समाचारपत्रों व्यक्ति व्यक्ति रेडियो और टेलीविजन जैसे जनसंचार माध्यम जनमत पर जोरदार प्रभाव डालते हैं। अगर हममे से हर कोई पर्यावरण के बारे में संवेदनशील रहे तो प्रेस और संचार माध्यम हमारे प्रयासो को सफल बनाने में अपनी भूमिका अदा करेंगे। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए हमे प्रत्येक कार्य पर्यावरण संगत करना चाहिए तथा अधिक से अधिक संख्या में पृथ्वी पर वृक्ष लगाने चाहिए। हममें से हर एक पर अधिक से अधिक लोगों तक यह संदेश पहुंचाने की जिम्मेदारी है।

20वीं शताब्दी में पृथ्वी को बचाने के लिए 1970 में पहली बार अमेरिकी सीनेटर गायलॉर्ड नेल्सन ने पृथ्वी दिवस की शुरुआत की इसके पहले समारोह मे लगभग 2 करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया जो पर्यावरण के प्रति विश्व चेतना जागृत होने का बड़ा प्रमाण था। इसके बाद प्रति वर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाने लगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में जून 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में भारत सहित सम्मिलित 119 देशों के राष्ट्राध्यक्षो ने इस पर गहरी चिंता जताई। यह सम्मेलन पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रथम सामूहिक प्रयास के रूप में सामने आया। तब से ही जन चेतना जागृत करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य था नागरिको को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराना और पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए राजनीतिक चेतना जागृत करना। उस साल सम्मेलन में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव विषय पर व्याख्यान भी दिया था।

लेकिन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए क्रियान्वित किए जा रहे कार्यक्रमों के बहुत अच्छा परिणाम न मिलने का प्रमुख कारण जनसहभागिता की कमी के रूप में सामने आया है। सन् 1992 में रियो डी जनेरियो,ब्राजील में पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें 150 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें पर्यावरण सम्मत विकास पर बल दिया गया। इसके एक दशक बाद सन् 2002 में जोहान्सबर्ग में द्वितीय पृथ्वी सम्मेलन हुआ जिसे रियो 10 कहा गया। इसे सतत विकास पर विश्व सम्मेलन भी कहा गया। सन् 2012 में पुनः रियो डी जनेरियो में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया जिसे रियो 20 नाम दिया गया। अंततः जन चेतना विस्तार में सफलता मिली।

हमारे देश में अनेक सरकारी गैर सरकारी संगठन है जो पर्यावरण की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा तथा प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में दिलचस्पी बढ़ाई है। जैसे **The Bombay Natural History Society** ने "खामोश वादी को बचाओ" अभियान चलाया। उसी तरह **CPR Environmental Education Centre** को 1988 में चेन्नई मे स्थापित किया गया।यह प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए आम तौर पर गैर सरकारी संगठनों ,अध्यापको, महिलाओं,युवकों और बच्चों पर ध्यान केन्द्रित करता है।अहमदाबाद में भी पर्यावरण शिक्षा केंद्र 1989 में खोला गया जो अनेक प्रकार की शिक्षा सामग्री तैयार करता है इसके पर्यावरण शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम ने अनेक पर्यावरण शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है।

हमारे पर्यावरण को बचाने के लिए बहुत से राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय विचारक हुए हैं। जिनमें 1960 के दशक में रेचल कार्सन ने अनेक लेख प्रकाशित किए जिससे दुनिया भर में प्रकृति और मानव जाति पर कीड़ा मार दवाओ के प्रभावो को लेकर चर्चा शुरू हो गई। उन्होंने **"silent spring"** नाम की एक किताब लिखी जिससे सरकार की नीतियों मे परिवर्तन आया और जनता मे जागरूकता आई। हमारे देश में भी अनेक ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने पर्यावरण का इतिहास रचा है। सलीम अली का नाम भारत में पक्षी विज्ञान और बांबे नेचुरल हिस्टरी सोसाइटी से एकाकार है। उनकी आत्मकथा हर प्रकृति प्रेमी को पढनी चाहिए। वे हमारे देश के एक अग्रणी संरक्षण प्रेमी वैज्ञानिक थे उन्होंने 50 वर्षो से अधिक हमारे देश की पर्यावरण संबंधी नीतियों को प्रभावित किया।इसी तरह सुन्दर लाल बहुगुणा जिनकी 21 मई 2021 को कोरोना महामारी से निधन हो गया उनके नेतृत्व में उत्तराखंड में एक आन्दोलन की शुरुआत की गई जिसका नाम दिया गया "चिपको आंदोलन" । इस आंदोलन में पेड़ों को काटने से बचाने के लिए गांव के लोग पेड़ से चिपक जाते थे इसी वज़ह से इस आंदोलन का नाम चिपको आंदोलन पड़ा।इसी तरह बहुत सारे लोगों ने इस क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाई लेकिन फिर भी पर्यावरण चेतना जागृत करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा हमारे सीमित और घटते संसाधनों को अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए सम्भाल कर रखना हमारा फर्ज होना चाहिए। पर्यावरण पर किसी एक देश या मानव का अधिकार नहीं है ब्लकि यह समस्त जीवो का साझी विरासत है।

पर्यावरण जागरूकता के लिए समन्वित ग्रामीण विकास योजनाओं में पर्यावरणीय विचार का समावेश किया जाना चाहिए। प्रौढ़ शिक्षा,कृषि विस्तार,महिला एवं शिशु कल्याण इत्यादि सरकारी योजनाओं के साथ साथ क्षेत्रीय भाषा व स्थानीय बोली में पर्यावरण संबंधी जानकारी दी जाए।साथ ही दूरदर्शन,आकाशवाणी,समाचारपत्र,फिल्म प्रदर्शन,पोस्टर,होर्डिंग,नाटक,रैली,कवि सम्मेलन आदि माध्यम से जनसामान्य में पर्यावरण संरक्षण का संदेश पहुंचाया जाना कारगर हो सकता है। महाविद्यालयो में सेमिनार व कार्यशाला का आयोजन उपयोगी हो सकता है। इस ओर धर्म गुरु व उपदेशक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस तरह हम पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहतर उपाय कर सकते हैं।

निष्कर्ष... निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण जागरूकता शिक्षण का आधार है। मानव की प्रगति और सभ्यता के विकास के साथ पर्यावरण समस्त जीवधारियों के जीवन और विकास को प्रभावित करने वाला घटक है। इसके अभाव में किसी जीव के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जहां पर्यावरण है वहीं जीवन है। इसीलिए हमलोग को अपने जीवन काल में पौधा लगाना चाहिए साथ ही पर्यावरण की रक्षा के लिए स्वयं जागरूक रहते हुए दूसरों को भी जागरूक करना चाहिए क्योंकि पर्यावरण को हरा भरा रखने में इंसान दो तरह से योगदान कर सकता है वृक्षारोपण करके व जीवित वृक्षों को संरक्षित करके।

संदर्भ सूची

1. मनुष्य और पर्यावरण – इरफान हबीब
2. पर्यावरण भूगोल का स्वरुपमनुष्य और पर्यावरण.– इरफान हबीब
3. पर्यावरण भूगोल का स्वरुप – सविनद्र सिंह
4. पर्यावरण एवं परिस्थितिकी –. माजिद हुसैन
5. पर्यावरण एवं समाज-डॉ0 अजय सिंह,डॉ0 सुरेंद्र सिंह,सविनद्र सिंह
6. पर्यावरण एवं परिस्थितिकी– माजिद हुसैन
7. पर्यावरण एवं समाज – डॉ0 अजय सिंह, डॉ0 ,सुरेंद्र सिंह
8. पर्यावरण प्रदूषण समाज, साहित्य और संस्कृति– विजय कुमार संदेश।